रामन् लोक कला महोत्सव

दिनांकः 1 से 3 अप्रैल 2019 तक

पारंपरिक विरासत का
बहुरंगी समागम

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

करगी रोड, कोटा, जिला- बिलासपुर

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

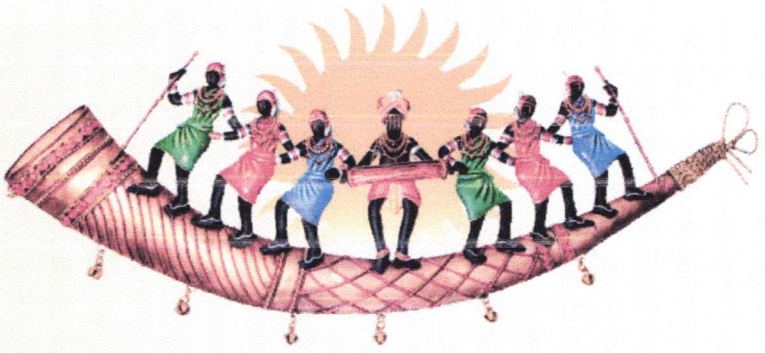

रामन् लोक कला महोत्सव 2019

प्रस्तावना

प्रस्तावना : डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय छ.ग. निजी विश्वविद्यालय का (स्थापना एवं संचालन) अधिनियम 2005 के प्रावधानों के अनुसार बिलासपुर जिला के दुरस्थ ग्रामीण वनचंल ग्राम कोटा में 3 नवम्बर 2006 को की गई। विश्वविद्यालय के स्थापना के समय से ही आसपास के ग्रामीण दूरस्थ अंचलों के विद्यार्थियों में विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा एवं संचार तकनीक से युवाओं को जोड़ने के लिए कार्य करती आ रही है। विश्वविद्यालय को गुणवता, स्वच्छता एवं गुणवतापूर्ण शिक्षा के लिए अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके है। साथ ही साथ विश्वविद्यालय में तकनीकी शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा संचालन हेतु तथा प्रवेशित विद्यार्थियों को सार्वधिक रोजगार प्रदान करने के लिए भी पुरस्कृत किया जा चुका है। विश्वविद्यालय NIRF में भी रैंकिग प्राप्त कर चुकी हैं एवं NAAC द्वारा B+ ग्रेड प्रत्यायित किया गया है। विश्वविद्यालय अपने उत्कृष्ट अधोसंरचना एवं उच्च स्तरीय पुस्तकालय के लिए मध्य भारत में जाना जाता है, विश्वविद्यालय में केन्द्र एवं राज्य सरकार के योजनाओं के अनुरुप विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए प्रधानमंत्री कौशल केन्द्र, दीनदयाल उपाध्याय कौशल विकास केन्द्र एवं अनेक उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किये गये है। विश्वविद्यालय में भाषा की शिक्षा हेतु लैंगवेज लेब की व्यवस्था की गई है। आत्मनिर्भर भारत, समग्र भारत हेतु रमन् इनिक्वेशन सेन्टर स्थापित किये गये हैं। अपने विद्यार्थियों को कलात्मक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा आसपास के गाँवों में विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जागरुकता लाने लोककला, लोककला संस्कृति के संरक्षण एवं संर्वधन तथा लोक कलाकारों को मंच प्रदान करने के लिए समुदायिक रेडियो (रेडियो रामन् 90.4) की स्थापना गई है। ग्रामीण प्राद्यौगिकी विभाग के माध्यम से विद्यार्थियों एवं क्षेत्र के युवाओं को ग्रामीण तकनीकी से जोड़ते हुए रोजगार स्वरोजगार के लिए उन्मुख किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय अपने स्थापना काल से ही छत्तीसगढ़ के उत्कृष्ठ परंपरा लोककला एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं इससे अपने विद्यार्थियों एवं प्रदेश के युवा पीढ़ी को जोड़ने के लिये संकल्पित है। विलुप्त होती कला एवं संस्कृति को मंच प्रदान करने तथा इसे शिक्षा से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय सतत् प्रयत्नशील रहा है। सन् 2010 में कला संकाय का स्थापना कर क्षेत्र के कला एवं पुरातातविक संपदा से विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए इतिहास, समाजशास्त्र, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, प्राच्यभाषा विभाग आदि में स्नातक एवं स्नातकोत्तर की कक्षा प्रारंभ की। विश्वविद्यालय में प्रतिवर्ष होने वाले कुल उत्सव में विद्यार्थियों के कलात्मक रुझान एवं लोककला के प्रति उनके जुड़ाव को देखते हुए विश्वविद्यालय ने छत्तीसगढ़ लोककला एवं संस्कृति केन्द्र स्थापित किया गया।

Dr. C. V. Raman University ★ Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.) ★ Registrar

रविन्द्रनाथ टैगोर अन्तर्राष्ट्रीय कला एवं संस्कृति केन्द्र की स्थापना की गई नवम्बर माह को छत्तीसगढ़ लोककला उत्सव हेतु निर्धारित किया गया जो की प्रदेश एवं विश्वविद्यालय की स्थापना माह है। विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी भाषा को जन-जन की भाषा से प्रशासनिक भाषा एवं व्यावहारिक राजभाषा बनाने के लिए एवं छत्तीसगढ़ी भाषा में शोध एवं सृजनशीलता को बढ़ावा देने के लिए छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजनपीठ तथा अनेक साहित्यिक गतिविधि हेतु वनमाली सृजनपीठ की स्थापना की गई। कला एवं संस्कृति की शिक्षा हेतु ललित कला विभाग एवं रायगढ़ कत्थक केन्द्र की स्थापना की गई।

प्रदेश के युवापीढ़ी एवं विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में छत्तीसगढ़ी लोककला एवं संस्कृति के प्रति रुझान तो है, परन्तु युवापीढ़ी में छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक प्रतीकों कला-संस्कृति एवं परम्पराओं की जानकारी के अभावों को देखते हुए विश्वविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों के शोध एवं सृजनशीलता को बढ़ावा देने के लिए लोककला केन्द्र जिसमें की छत्तीसगढ़ की सभी लोक कलाओं, लोक संस्कृति, लोक संगीत, लोक परम्पराओं जानकारी प्रदर्शित / स्थापित की गई है। विश्वविद्यालय परिसर में छत्तीसगढ़ की कला संस्कृति एवं छत्तीसगढ़ी जीवन शैली के प्रतीक चिन्हों को संरक्षित करने तथा इससे भावी पीढ़ी को जोड़ने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ी संजोही की स्थापना की गई। संजोही में विद्यार्थियों द्वारा अपने लोककला एवं संस्कृति के विरासत तथा छत्तीसगढ़ी जीवन के प्रतीक चिन्हों को संकलित करने कार्य किया जा रहा है इस कार्य में विद्यार्थियों / शिक्षकों की भूमिका उल्लेखनीय रही। वर्तमान में विश्वविद्यालय का छत्तीसगढ़ी कला केन्द्र एवं छत्तीसगढ़ी संजोही शोध एवं प्रतियोगी परीक्षा के लिए तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिये उत्कृष्टता केन्द्र के रुप में कार्य कर रहा है।

विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास के लिए उत्कृष्टता केंद्र

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास के लिए उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना की गई है। जो निम्नानुसार है:-

1. रामन सेंटर फॉर साइंस कम्युनिकेशन,
2. सेंटर फॉर बायोटेक्नालॉजी रिसर्च,
3. सेंटर फॉर छत्तीगढ़ी लोक कला, संस्कृति एवं साहित्य,
4. सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर रुरल टेक्नोलॉजी एंड एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट
5. सेंटर फॉर रिनिवेबल ग्रीन एनर्जी,
6. सेंटर फॉर परफार्मिंग आर्ट्स एंड रायगढ़ कला कथक,
7. सेंटर फॉर फ्यूचर स्किल एकेडमी,
8. सेंटर फॉर रिमार्ट सेसिंग एंड जीआईएफ
9. सेंटर फॉर इंक्यूबेशन एंड स्टार्टअप,
10. सेंटर फॉर एक्सीलेंस फॉर एडवांस एनवारमेंटल रिसर्च,
11. छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजन पीठ
12. रविन्द्रनाथ टैगोर लोककला केंद्र
13. वनमाली सृजन पीठ

Registrar

रामन् लोक कला महोत्सव

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा प्रदान करने के साथ प्रदेश की लोककला, संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण एवं संर्वधन के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसके लिए वर्ष 2019 में पहली बार रामन् लोककला महोत्सव का आयोजन किया है। जिसमें छत्तीसगढ़ के सभी जिलों, दूरस्थ ग्रामीण अंचल और वनांचलों के लोक कलाकारों को मंच प्रदान किया गया है और वे अपने कार्यक्रम की प्रस्तुति देते हैं। इस महोत्सव का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की लोककला, संस्कृति और साहित्य संरक्षण और संर्वधन के साथ उसके मूल रुप में ही भावी पीढ़ी तक हस्तांतरित करना है। इस महोत्सव में वर्ष 2019 में वनमाली सृजन पीठ, बिलासपुर के द्वारा कहानी पाठ एवं कविता पाठ पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था, जिसमें भारत के सभी राज्यों के राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों ने शिरकत की थी। इस महोत्सव ने कम समय में ही देश भर में अपनी ख्याति अर्जित की है। लोककला उत्सव में प्रमुख रुप से छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचलों जैसे- लोरमी, बेलगहना, भिलाई, पामगढ़, मुंगेली, बिलासपुर क्षेत्र के स्थानीय कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रकार के नृत्यों जैसे - पंथी, करमा, बांस, पंडवानी, छत्तीसगढ़ी नाटक, राजा कोकलवा, बांसुरी वादन का भी मंचन हुआ। इस लोक उत्सव में स्थानीय ग्रामीण के साथ-साथ बस्तर, रायगढ़, भिलाई, तमनार, रायपुर क्षेत्र के हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित हस्तशिल्प जैसे बांस कला, बेल मेटल आर्ट, काष्ट कला, मृदा शिल्प आदि के साथ-साथ विभिन्न शासकीय विभागों की प्रदर्शनी एवं स्टाल भी लगाए गए।

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय द्वारा क्षेत्र एवं प्रदेश के विभिन्न कलाओं को संरक्षित एवं सर्वधित करने तथा छत्तीसगढ़ी लोककला एवं संस्कृति को मूलरुप से जीने वाले लोक कलाकारों को मंच प्रदान करने प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर रामन् लोककला महोत्सव प्रांरभ किया गया। इस महोत्सव का आयोजन तीन दिन तक किया जाता है, जहां पर विभिन्न विधाओं का रंगारंग प्रस्तुति लोक कलाकारों द्वारा किया जाता है। वहीं रोजमर्रा के कार्यो में समाज की आत्मनिर्भरता एवं उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए छत्तीसगढ़ी ग्रामीण प्रौद्योगिकी को विभिन्न स्थलो में प्रदर्शित किया गया था, जो युवाओं को आत्मनिर्भरता एवं स्वरोजगार के लिए प्रेरित करता है तथा महोत्सव में छत्तीसगढ़ की पुरातन मनोरंजन प्रणाली मेला के प्रारुपों को भी जीवंत किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य

छत्तीसगढ़ में लोक गीतों, लोक नृत्यों, लोक नाट्य और लोक गाथाओं का समृद्ध इतिहास रहा है, लेकिन अब अनेक लोक कलाएं लुप्त होने की कगार पर हैं इनके संरक्षण के प्रयास की ओर विश्वविद्यालय ने अपना कदम बढ़ाया जिसने रामन् लोक कला महोत्सव का रुप लिया। छत्तीसगढ़ के लोक कलाकार आधुनिकता की चकाचौंध में विलुप्त न हो जाए इसलिए प्रदेश के कलाकारों की कला को मंच प्रदान कर एवं भावी पीढ़ी को उनकी कला हस्तांतरित करने के उद्देश्य से डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय के द्वारा तीन दिवसीय रामन् लोककला महोत्सव का आयोजन 2019 में पहली बार आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मूल उद्देश्य ऐसी प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना है जो प्रदेश की लोक कला को मूलरुप में समेटे होने के बाद भी मंच प्राप्त न कर पाया हो। छत्तीसगढ़ राज्य में ऐसी अनेक लोक विधाएं और लोक कलाकार हैं जिनके विषय में लोग अपरिचित हैं और यदि परिचित हैं भी, तो युवा पीढ़ी उन विधाओं से जो अपने मूल स्वरुप से अलग हो चुके हैं। ऐसी विलुप्त होती लोककला को सरंक्षित करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने रामन् लोक कला महोत्सव आयोजित करने की पहल की है, जिसका एक और उद्देश्य विद्यार्थियों एवं प्रदेश के रहवासियों में छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक संस्कृति और लोक साहित्य के प्रति जागरुकता लाना और अंचल की परंपरा और संस्कृति के मूल रुप को सवंर्धित करना है, साथ ही छत्तीसगढ़ की विलुप्त होती संस्कृति और परंपरा का ज्ञान भरपूर मात्रा में विद्यार्थियों एवं लोगों तक पहुंचे, यही इस आयोजन का मूल उद्देश्य है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

आमंत्रण

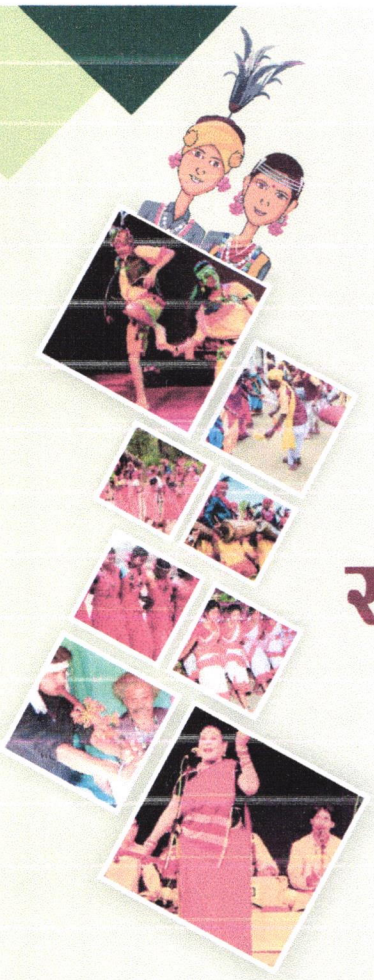

CVRU
DR. C.V.RAMAN UNIVERSITY

रामन् लोक कला महोत्सव

दिनांकः 1 से 3 अप्रैल 2019 तक
समयः शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

करगी रोड, कोटा, जिला- बिलासपुर

1 अप्रैल 2019

रामन् लोक कला महोत्सव में उपस्थित अतिथिगण

मुख्य अतिथि
श्री शैलेष पाण्डेय जी
माननीय विधायक, बिलासपुर

अध्यक्षता
श्री संतोष चौबे जी
कुलाधिपति, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

विशिष्ट अतिथि
श्री मुकेश वर्मा जी
कथाकार एवं संपादक समावर्तन

श्री बलराम गुमास्ता जी
कवि एवं गद्यकार, भोपाल

श्री नितिन वत्स जी
निदेशक, आईसेक्ट

प्रोफेसर आर.पी. दुबे
कुलपति, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

श्री गौरव शुक्ला
कुलसचिव, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

मुख्य कार्यक्रम
(समयः शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक)

पद्म विभूषण तीजन बाई
पंडवानी, भिलाई

नीरज आर्या एवं साथी
कबीर कैफे, मुंबई

राबेली ग्रुप
बॉस गीत, लोरमी

विश्वविद्यालय की प्रस्तुति
छत्तीसगढ़ी नृत्य

2 अप्रैल 2019

रामन् लोक कला महोत्सव में उपस्थित अतिथिगण

मुख्य अतिथि
श्रीमती रश्मि सिंह जी
माननीय विधायक, तखतपुर

अध्यक्षता
श्री संतोष चौबे जी
कुलाधिपति
डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

विशिष्ट अतिथि
श्री सतीश जायसवाल जी
अध्यक्ष, वनमाली सृजन पीठ

डॉ विनय पाठक जी
पूर्व अध्यक्ष, छ.ग. राजभाषा आयोग

प्रोफेसर आर.पी. दुबे
कुलपति, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

श्री गौरव शुक्ला
कुलसचिव, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

मुख्य कार्यक्रम
(समयः शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक)

चित्रोत्पला लोककला परिषद
छत्तीसगढ़ी नाटक (राजा फोकलवा)
रायपुर

लक्ष्मी पाटिल व साथी
कला मंच (पारंपरिक लोकगीत एवं लोक नृत्य) तिफरा

नरेन्द्र यादव व साथी
करमा नृत्य, बेलगहना

विश्वविद्यालय की प्रस्तुति
छत्तीसगढ़ी नृत्य

3 अप्रैल 2019

रामन् लोक कला महोत्सव में उपस्थित अतिथिगण

मुख्य अतिथि
श्रीमती रेणु जोगी जी
माननीय विधायक, कोटा

अतिविशिष्ट अतिथि
श्री धर्मजीत सिंह जी
विधायक, लोरमी

श्री कृष्णमूर्ति बांधी जी
माननीय विधायक, मस्तूरी

अध्यक्षता
श्री संतोष चौबे जी
कुलाधिपति, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

विशिष्ट अतिथि
श्री विनय उपाध्याय जी
कला समीक्षक, भोपाल

प्रोफेसर आर.पी. दुबे
कुलपति, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

श्री गौरव शुक्ला
कुलसचिव, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

मुख्य कार्यक्रम
(समयः शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक)

डॉ. निशांत शुक्ला
बांसुरी वादन

चैतन्य कॉलेज
गेड़ी नृत्य, पामगढ़

हिलेन्द्र सिंह ठाकुर व साथी
कला मंच (पारंपरिक लोकगीत एवं लोक नृत्य), बिलासपुर

साधेलाल रात्रे व साथी
पंथी नृत्य, मुंगेली

Registrar
Dr. C.V. Raman University ★ Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.) ★

प्रतिवेदन प्रथम दिवस

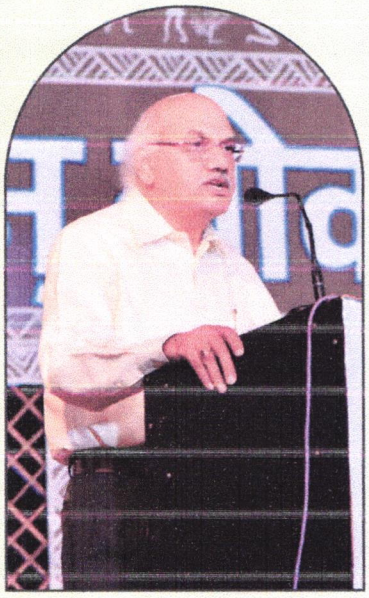

डॉ. सी वी रामन विश्वविद्यालय के तीन दिवसीय लोक कला महोत्सव का शुभारंभ दिनांक 1 अप्रैल 2019 से 3 अप्रैल 2019 तक हुआ। सर्वप्रथम राष्ट्रगान एवं कुल गीत विश्वविद्यालय के रामन् बैंड द्वारा गाया गया। महोत्सव का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रदेश के माननीय विधायक श्री शैलेष पाण्डेय के कर कमलों से किया गया। इस अवसर पर उपस्थित डॉ. सी वी रामन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ लोककला को समझना जरुरी है यह हमें संस्कृति से जोड़ती है ।

इस अवसर पर माननीय विधायक श्री शैलेष पाण्डेय ने कहा कि नए टेक्नोलॉजी युवाओं को लोक कला और संस्कृति से दूर ले जाती रही है आज अपनी मिट्टी से जुड़ने की जरुरत है इस विद्यालय में यह महत्वपूर्ण कार्य किया है और यह महोत्सव राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रुप ले गए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ की लोक कला को अनंत काल तक संरक्षित करेगा।

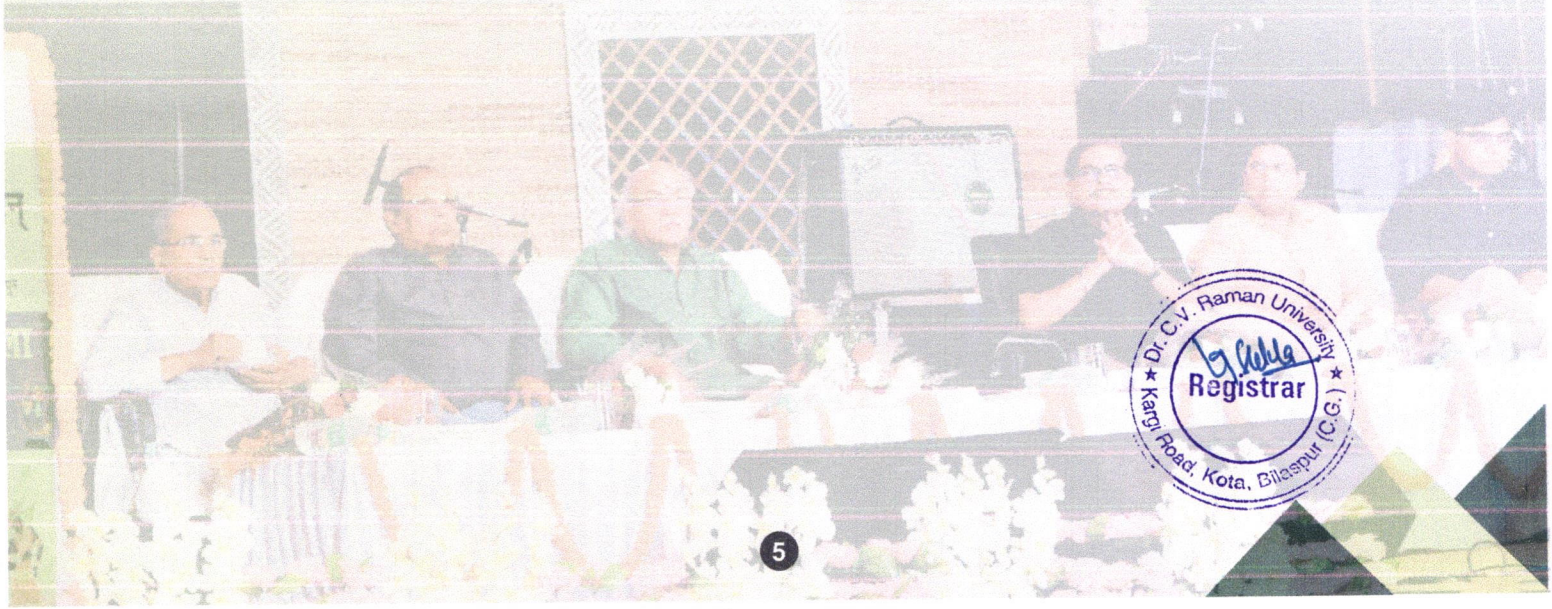

विशिष्ट अतिथि श्री मुकेश वर्मा जी ने कहा यह कार्यक्रम कला और संस्कृति को सहेजने और संवारने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय के इस प्रयास आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और स्वदेशी अलख जगाने में मदद करेगी। इससे लोक कलाकार अपने लोक कला को देश-विदेश तक पहुंचा पाएंगे। लोक कला, संस्कृति, परंपराएं सही मायने में यह आत्मनिर्भर भारत की आत्मा है। इसलिए ही आज केंद्र सरकार वापस गांव की ओर जाकर संस्कृति परंपराओं के साथ जीवन जीने और आत्मनिर्भर होने के लिए कार्य कर रही है ।

विशिष्ट अतिथि श्री बलराम गुमास्ता (प्रसिद्ध कवि एवं गद्यकार) ने कहा कि छत्तीसगढ़ की जीवन संस्कृति को सभामंडपों, रंगमहलों तक सीमित रखने के बजाय जन-जन तक ले जाने में डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह आयोजन विभिन्न कला संस्कृतियों के लोगों के बीच आपसी सम्बन्ध, समझ को बढ़ाएगा। राष्ट्रीय कला महोत्सव आमजन लोगों को अपनी क्षेत्रीय कला को इसकी बहूयामी प्रकृति, समृद्धि और ऐतिहासिक महत्व के साथ जोड़ने का कार्य करेगा।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि आईसेक्ट निदेशक श्री नितिन वत्स जी ने कहा पहले लोक कलाओं के माध्यम से लोग अपनी रचनाओं, सभ्यता व संस्कृति से जुड़े रहते थे, लेकिन लोक कला संस्कृति में हो रहे बदलाव चिंता का विषय है ऐसे में युवा पीढ़ी को लोक कलाओं से जागरुक करने की आवश्यकता है और इस कार्य में आगे बढ़ कर डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय ने इस कार्यक्रम के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि लोक कलाकारों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया जा रहा है जो अत्यंत ही सराहनीय है।

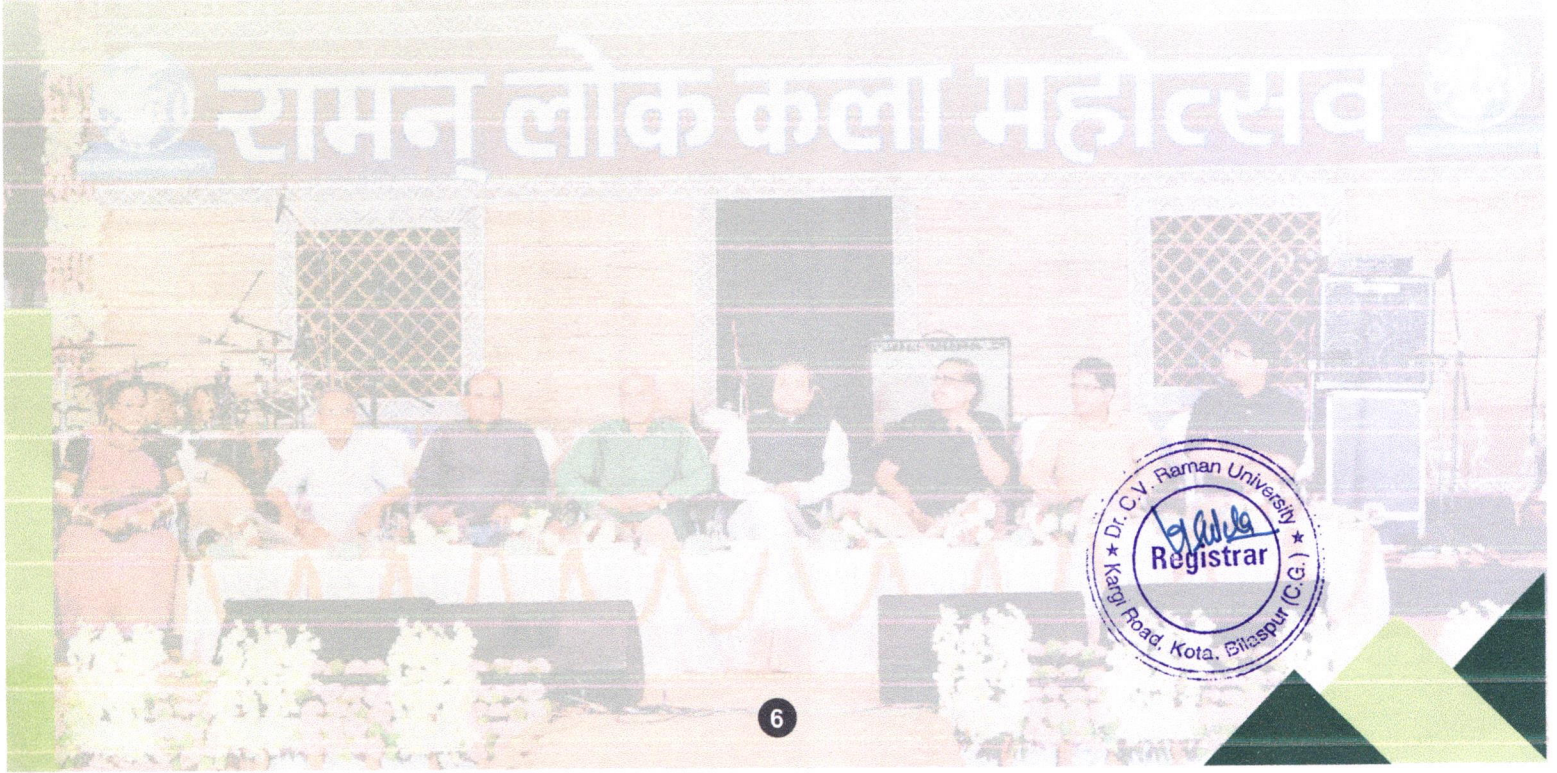

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि कला संस्कृति और साहित्य मानव जीवन का अनिवार्य अंग है इसके बिना मानव जीवन ही अधूरा है। उन्होंने कहा लोक कला संस्कृति हमारी धरोहर है जिसमें छत्तीसगढ़ की पहचान ना केवल भारतवर्ष में है अपितु विदेशों में भी है लोक कला से आदर्श जीवन जीने की शिक्षा मिलती है। इस पर डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय ने अत्यंत महत्वपूर्ण कदम उठाया है, जो निश्चित रूप से लोक कलाकारों को आगे आने और अपनी पहचान बनाने का कार्य करेगा।

इस अवसर पर उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि चूँकि यह विश्वविद्यालय आदिवासी क्षेत्र में स्थापित किया गया है इसलिए लोककला धरोहर को ना केवल सुरक्षित करने बल्कि उसे और आगे बढ़ाने का दायित्व विश्वविद्यालय का है। लोक कला संस्कृति महोत्सव कराने वाला या प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय बन गया है और उन्होंने कहा कि आधुनिकता और पाश्चात्य के फेरे में विद्यार्थी ना उलझे बल्कि लोक कला और लोक गायन से भी सर्वोच्च शिखर तक पहुंचा जा सकता है। इसका जीवंत उदाहरण पद्म विभूषण तीजन बाई है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

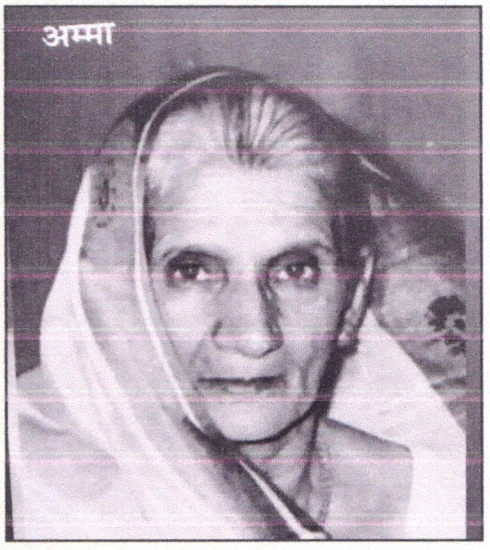

शारदा देवी लोक कला सम्मान

वरिष्ठ साहित्यकार श्री जगन्नाथ प्रसाद चौबे वनमाली जी की धर्मपत्नी एवं डॉ सी. वी. रामन विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति श्री संतोश चौबे जी की माता जी श्रीमती शारदा चौबे जी की स्मृति में शारदा देवी लोक कला सम्मान प्रदान किया जाता है। यह सम्मान लोककला के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान अर्जित करने वाले लोक कलाकारों को प्रदान किया जाता है। श्रीमती शारदा देवी चौबे की लोककला, संस्कृति और साहित्य में विशेष अभिरूचि थी। वह स्थानीय लोककला को मूल रूप में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने की मंशा रखती थी। श्रीमती भाारदा चौबे की इस सोच की झलक श्री जगन्नाथ प्रसाद चौबे वनमाली जी के साहित्य में परिलक्षित होती है। स्थानीय लोक कलाकारों को उनकी प्रतिभा के अनुरूप मंच मिले एवं वे वैश्विक स्तर पर ख्याति अर्जित कर सकें, श्रीमती भारदा चौबे के इस सपने को साकार करने के लिए डॉ सी वी रामन विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति एवं साहित्यकार श्री संतोष चौबे जी ने श्रीमती शारदा चौबे लोककला सम्मान की स्थापना की है। श्रीमती शारदा चौबे जी की लोककला, संस्कृति और साहित्य के प्रति लग्न की छाया कुलाधिपति श्री संतोष चौबे जी में स्पश्ट नजर आती है। यही कारण है, कि श्री संतोष चौबे जी शिक्षा जगत के साथ–साथ कला, साहित्य, संस्कृति में भी बराबर का हस्तक्षेप रखते हैं। उन्होंने मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ ही नहीं वरन भारत के साथ–साथ दुनिया के कई देशों में छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश की लोककला, संस्कृति और साहित्य को स्थापित किया है। इस क्रम में बीते 10 वर्षों से डॉ. सी वी रामन विश्वविद्यालय, बिलासपुर छत्तीसगढ़ में रामन लोककला महोत्सव आयोजित किया जा रहा है। इस लोक कला महोत्सव आयोजित करने का उद्देश्य छत्तीसगढ़ी लोककला, संस्कृति के कलाकारों एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य को संरक्षित एवं संवर्धित

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

शारदा देवी लोक कला सम्मान

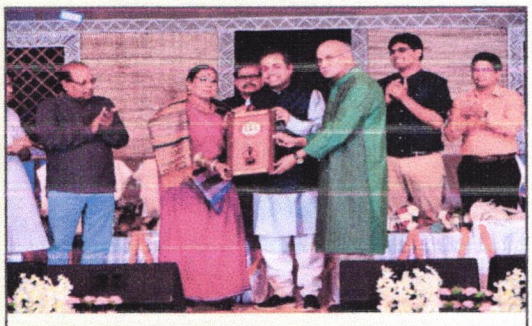

श्री संतोष चौबे द्वारा लोक प्रसिद्ध पंडवानी गायिका तीजन बाई को श्रीमती शारदा देवी लोककला सम्मान प्रदान किया गया

करना है। इस महोत्सव में छत्तीसगढ़ प्रदेश के सभी जिलों के कोने कोने से अपनी विधाओं में विख्यात लोक कलाकार शिरकत करते हैं, एवं अपने कला की प्रस्तुति देते हैं। इसी क्रम में वर्श 2019 में डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, बिलासपुर में आयोजित रामन लोककला महोत्सव में श्रीमती शारदा देवी लोककला सम्मान प्रदान करने के लिए प्रसिद्ध पंडवानी गायिका तीजन बाई का चयन किया गया। तीजन बाई को सन् 2003 में उन्हें पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया एवं सन् 2019 में भारत के महामहिम राष्ट्रपति के करलों से पद्मविभूषण सम्मान प्रदान किया गया। तीजन बाई का जन्म स्थान इस्पात नगरी भिलाई के समीप गनियारी है। तीजन बाई को पंडवानी विरासत में मिली। मातृकुल से उनके नाना बृजलाल पारधी पंडवानी कहते थे। बचपन में तीजन बाई ने नाना से पंडवानी सुनी और वह उसे कंठस्थ हो गयी। चंदखुरी में उन्हें पहली बार पंडवानी गायन का मौक़ा मिला। एक बार वह भारत महोत्सव में गयी। दिल्ली में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के सम्मुख उन्होंने पंडवानी प्रस्तुत की। इसके बाद उन्होंने फ्रांस, जर्मनी, मॉरीशस, तुर्की, रोमानिया, ग्लिादेश और स्विट्जरलैंड, माल्टा, ट्यूनीशिया और साइप्रस में उन्होंने अपनी प्रस्तुति भी दी। प्रसिद्ध पंडवानी गायिका तीजन बाई के पंडवानी के क्षेत्र में इस उपलब्धि एवं कार्य को देखते हुए, उन्हें वर्ष 2019 में रामन् लोक कला महोत्सव में श्रीमती शारदा देवी लोककला सम्मान प्रदान किया गया।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

पंडवानी

छत्तीसगढ़ का एकल नाट्य है पंडवानी। पंडवानी को पद्म विभूषण तीजन बाई ने भारतवर्ष ही नहीं बल्कि विदेशों में भी ख्याति दिलाई है। पंडवानी का अर्थ है पांडववाणी अर्थात् पांडवकथा या महाभारत की कथा। यह कथा परधान तथा देवार जातियों की गायन परंपरा है। परधान गोड़ों की एक उपजाति है और देवार घुमन्तु जाति है।

पंडवानी की दो शैलियां हैं - एक है कापालिक शैली जो गायक-गायिका की स्मृति में या कपाल में विद्यमान है। दूसरी है वेदमती शैली जिसका आधार है शास्त्र। कापालिक शैली वाचक परंपरा पर आधारित है और वेदमती शैली का आधार है खड़ी भाषा के पद्यरुप में। कापालिक शैली की विख्यात गायिका है तीजन बाई, शांतिबाई चेलकने, उषा बाई बारले। पुनाराम निषाद तथा पंचूराम रेवाराम वेदमति शैली के विख्यात गायक कलाकार रहे हैं। दोनों ही शैलियों में भाव-भंगिमाओं के द्वारा प्रस्तुति की जाती है। जब महाभारत के भीम का किरदार करें तो भम नज़र आये, अर्जुन के किरदार में अर्जुन और द्रौपदी का किरदार हो तो द्रौपदी नज़र आये तब इसे कहा जाता है कापालिक शैली। वेदमती शैली के गायक-गायिका वीरासन पर बैठकर पंडवानी गायन करते है। श्री झाड़ूराम देवांगन को पंडवानी का पितामह कहा जाता है। पंडवानी गायन में गायकों की व्यक्तिगत कल्पनाशीलता और तात्कालिकता का प्रस्तुती में बहुत गहरा प्रभाव रहता है। इस अवसर पर पद्म विभूषण पंडवानी गायिका नें गीतों के माध्यम से सबके मन को मोह लिया।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

कबीर कैफे ग्रुप, मुंबई

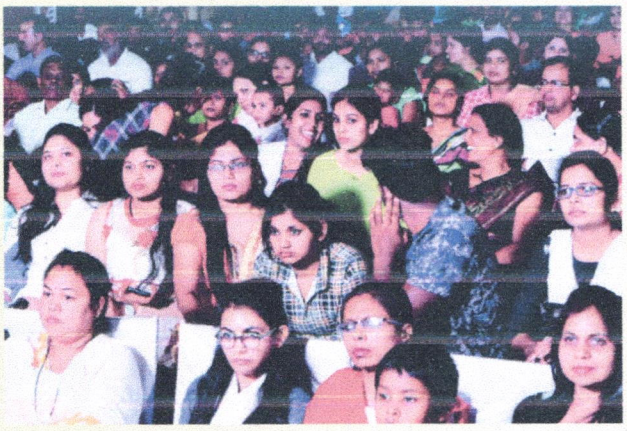

मुम्बई के नीरज आर्या एवं साथी ग्रुप ने संत कबीर के दोहे एवं अमृत वाणी को अपने अलग अंदाज में वेस्टर्न धुन से प्रस्तुति दी, जिसे लोगों ने काफी पसंद किया। क्षेत्र में कबीर पंथी समुदाय की बाहुलता है ऐसे में कबीर गायन में स्थानीय लोगों को आर्कषित किया। नीरज आर्या द्वारा कबीर के दोहे को एक नए अंदाज में प्रस्तुत किया गया जिसे विशेषकर युवाओं ने खूब सराहा एवं कई दिनों तक विद्यार्थी कबीर के दोहे को गुनगुनाते रहे।

बांस गीत

बांस गीत मुख्यतः राउत या अहीर जाति के लोगों द्वारा गाया जाता है। समुदाय के केवल पुरुष ही इस वाद्ययंत्र को बजाते हैं। आमतौर पर इस वाद्य यंत्र को कलाकार खुद ही बनाते हैं लेकिन कई बार बढ़ई की मदद से भी इसका निर्माण करवाते हैं। सर्वप्रथम सही बांस का चुनाव किया जाता है फिर उसमें चार छिद्र कर, ऊनी फूलों और रंगीन कपड़ों से साज-सज्जा की जाती है। पारंपरिक प्रदर्शन की बात की जाए तो प्रस्तुति में दो वादक के साथ एक कथाकार और एक रागी होता है। विश्वविद्यालय ने रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से लोरमी से आये हुये कलाकारों राबेली ग्रुप को मंच प्रदान किया जिसमें मुकुंद यादव एवं साथियों द्वारा प्रस्तुति दी गई। विलुप्त होती बांस गीत की परम्परा को संरक्षित करते हुए इसे जन-जन तक पहुंचाया। इससे आये हुए कलाकारों का कॉफी उत्साह वर्धन हुआ।

करमा नृत्य

विश्वविद्यालय की प्रस्तुति

यह नृत्य छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति का पर्याय है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी, गैर-आदिवासी सभी का यह लोक मांगलिक नृत्य है। छत्तीसगढ़ अंचल के आदिवासी समाज का प्रचलित लोक नृत्य है। भादों मास की एकादशी को उपवास के पश्चात करमवृक्ष की शाखा को घर के आंगन या चौगान में रोपित किया जाता है। दूसरे दिन कुल देवता को नया अन्न समर्पित करने के बाद ही उसका उपभोग शुरु होता है। कर्मा नृत्य नई फसल आने की खुशी में किया जाता है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road Kota, Bilaspur (C.G.)

प्रतिवेदन द्वितीय दिवस

दीप प्रज्जवलित करते हुए

डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय में चल रहे रामन लोक कला महोत्सव के दूसरे दिन 2 अप्रैल मंगलवार को शुभारंभ मुख्य अतिथि तखतपुर विधायक रश्मि सिंह के कर कमलों से हुआ। इस अवसर पर लोक कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी लोकगीत और संगीत की झमाझम प्रस्तुति दी। इस अवसर पर महोत्सव में विद्यार्थियों और पालकों की भारी भीड़ रही। विश्वविद्यालय के विभागों द्वारा सभी प्रदर्शनी में जानकारी लेने युवा विद्यार्थी और अचंल के लोग यहां पहुंचे। इसी तरह केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार व स्थानीय निकाय के द्वारा लगाए गए प्रदर्शनी में भी लोग जानकारियां लेते रहे। आयोजन के दूसरे दिन छत्तीसगढ़ी नाटक राजा फोकलवा, पारंपरिक लोकगीत एवं लोक नृत्य, करमा नृत्य एवं गेड़ी नृत्य की शानदार प्रस्तुतियां हुई जिसे आये हुये अतिथियों एवं ग्रामीणों ने कॉफी सराहा।

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि तखतपुर विधायक रश्मि सिंह ने कहा कि संस्कृति से जिसका लगाव होता है, हर देश और राज्य की संस्कृति उसकी अपनी संस्कृति होती है। डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय अंग्रेजी पद्धति के साथ संस्कृति और लोककला की भी शिक्षा दे रहा है, यह पूरे प्रदेश के लिए गौरव की बात है। रश्मि जी ने छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के अनेक कलाकारों को याद करके उनकी बातों को साझा किया और उन्होंने इस आयोजन के लिए विश्वविद्यालय परिवार को बधाई दी।

द्वितीय दिवस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री सतीश जयसवाल अध्यक्ष वनमाली सृजन पीठ जी ने कहा लोक कला के बिना मनुष्य का जीवन नीरस है। लोक कला एवं संस्कृति का संरक्षण इसलिए आवश्यक है कि यह मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाने के लिए उपयोगी है, जिस पर डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है जो कि विश्वविद्यालय की दूरदर्शिता को बताता है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय कुमार पाठक ने कहा कि इस आयोजन के विश्वविद्यालय ने पूरे प्रदेश में अच्छा संदेश दिया है महोत्सव से कलाकारों को मंच मिलेगा। इस पर डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय ने महत्वपूर्ण कदम उठाया है। जो निश्चित रुप से आगे आने और अपने भूमिका बनाने का कार्य करेगा।

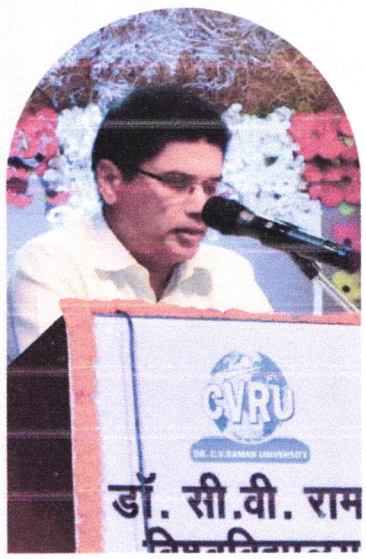

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रवि प्रकाश दुबे सर जी ने कहा कि लोक कला ही भारतीय संस्कृति की आत्मा है, जिसमें हम अपने लोक कला एवं संस्कृति का छाप छोड़ते हैं यह एक ऐसा माध्यम है जो हमें अपने पूर्वजों के साथ जोड़ता है इस लोक कलाओं को और बढ़ावा एवं मंच दिया जाना चाहिए, जिससे आने वाली पीढ़ी को इससे अवगत कराया जा सके।

विश्वविद्यालय के माननीय कुलसचिव श्री गौरव शुक्ला जी ने कहा हमें लोक कला एवं संस्कृति की अमूल्य धरोहर को सूक्ष्मता से समझना चाहिए एवं इसका समर्थन करना वर्तमान पीढ़ी का दायित्व है। ग्रामीण परिवेश और लोक कला में व्याप्त रचनात्मक, अचार विहार कला तत्व के रूप में परिणित है, जो इस कलाओं को समृद्ध करते हैं और इस दिशा में डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय निरंतर कार्य कर रहा है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वितीय दिवस

राजा फोकलवा

राजा फोकलवा यह एक छत्तीसगढ़ी नाटक है जिसमें विभिन्न प्रकार की लोक कलाओं को नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। यह नाटक वर्तमान समय में व्याप्त भ्रष्टाचार में सीधा कुठाराघाट करता है एवं भ्रष्टाचारियों को अंतिम भयानक हस्र को रेखांकित करता है। रामन् लोक कला महोत्सव में रायपुर से आए हुए चित्रोत्पला लोक कला परिषद छत्तीसगढ़ नाटक का मंचन राकेश तिवारी एवं उनके साथियों के द्वारा किया गया। नाटक में दर्शकों के मनोरंजन को सतत् ध्यान रखा गया। इस नाटक की विशेषता रही मूल पात्र राजा फोकलवा जितना गंभीर है उतना ही उसका अभिनय हास्य पूर्ण है। नाटक के माध्यम से संदेश दिया गया कि अच्छे काम का फल अच्छा और बुरे काम का फल बुरा होता है।

पारंपरिक लोक नृत्य

पारंपरिक लोकगीत एवं लोक नृत्य लक्ष्मी पाटिल एवं उनके साथियों द्वारा पारंपरिक लोकनृत्य की रंगारंग प्रस्तुति दी गई। जिसमें छत्तीसगढ़ के सभी पारंपरिक नृत्यों को एक-एक करके प्रस्तुति दी गई। जिसे ग्रामीण अंचल से आये हुये लोगों ने कॉफी सराहा।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

करमा नृत्य

यह नृत्य छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति का पर्याय है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी, गैर-आदिवासी सभी का यह लोक मांगलिक नृत्य है। कर्मा नृत्य, सतपुड़ा और विंध्य की पर्वत श्रेणियों के बीच सुदूर ग्रामों में भी प्रचलित है। शहडोल, मंडला के गोंड और बैगा तथा बालाघाट और सिवनी के कोरकू और परधान जातियाँ कर्मा के ही कई रुपों को नाचती हैं। बैगा कर्मा, गोंड़ कर्मा और भुंइयाँ कर्मा आदिजातीय नृत्य माना जाता है। बेलगहना से आए नरेंद्र यादव व उनके साथी ने करमा नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी। करमा नृत्य कर आदिवासी संस्कृति की झलक दिखाई दी जिसे लोगों ने काफी सराहा।

कर्मा नृत्य के प्रकार

यों तो कर्मा नृत्य की अनेक शैलियाँ हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ में पाँच शैलियाँ चलित हैं, जिसमें झूमर, लंगड़ा, ठाढ़ा, लहकी और खेमटा हैं। जो नृत्य झूम-झूम कर नाचा जाता है, उसे 'झूमर' कहते हैं। एक पैर झुकाकर गाया जाने वाल नृत्य 'लंगड़ा' है। लहराते हुए करने वाले नृत्य को 'लहकी' और खड़े होकर किया जाने वाला नृत्य 'ठाढ़ा' कहलाता है। आगे-पीछे पैर रखकर, कमर लचकाकर किया जाने वाला नृत्य 'खेमटा' है। खुशी की बात है कि छत्तीसगढ़ का हर गीत इसमें समाहित हो जाता है। कर्मा नृत्य में स्त्री-पुरुष सभी भाग लेते हैं। यह वर्षा ऋतु को छोड़कर सभी ऋतुओं में नाचा जाता है। सरगुजा के सीतापुर के तहसील, रायगढ़ के जशपुर और धरमजयगढ़ के आदिवासी इस नृत्य को साल में सिर्फ चार दिन नाचते हैं। एकादशी कर्मा नृत्य नवाखाई के उपलक्ष्य में पुत्र की प्राप्ति, पुत्र के लिए मंगल कामनाय अठई नामक कर्मा नृत्य क्वांर में भाई-बहन के प्रेम संबंध दशई नामक कर्मा नृत्य और दीपावली के दिन कर्मा नृत्य युवक-युवतियों के प्रेम से सराबोर होता है।

गेंड़ी

छत्तीसगढ़ के बस्तर अंचल में गेड़ी नृत्य को यहां के निवास करने वाले आदिवासी गोण्ड, माड़िया, मुरिया सभी प्रयोग करते हैं । लगभग 5 फीट के बांस को बराबर नाप में काटकर एक फीट में पैर रखने के लिए मजबूत पायदान तैयार किया जाता है जिस पर चढ़कर युवक मनचाहा नृत्य करता है । मान्यता यह भी है कि जब हरियाली त्यौहार से प्रारंभ कर नया खानी त्यौहार तक गांव के गोटूल में सामूहिक रुप से नाचते हैं वहीं यह भी माना जाता है कि जब वर्ष में एक बार तैयार करके विसर्जन किया जाता है तो गांव में फैली चर्म रोग जैसी बीमारियां भी गांव से चली जाती है । विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा बहुत ही अद्‌भुत रुप से मनभावन नृत्य की प्रस्तुति दी गई इसके माध्यम से मधुर धुन और बच्चों के लोकगीतों में लोगों का खूब वाहवाही लूटी।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

प्रतिवेदन तृतीय दिवस

डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय में चल रहे लोक कला महोत्सव के तीसरे दिन का शुभारंभ मुख्य अतिथि विधायक लोरमी श्री धर्मजीत सिंह जी के कर कमलों से हुआ। लोक कला महोत्सव के तीसरे व अंतिम दिन बुधवार को लोक कलाकार उन्हें अपनी प्रस्तुति से आये हुये अतिथियों एवं ग्रामीणों का मन मोह लिया। इस अवसर पर डॉ. निशांत शुक्ला के बांसुरी वादन ने मंत्र मुग्ध कर दिया इसके साथ कलाकारों ने गेड़ी नृत्य, पंथी नृत्य, छत्तीसगढ़ी लोकगीत और नृत्य की झमाझम प्रस्तुति दी जिसने लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

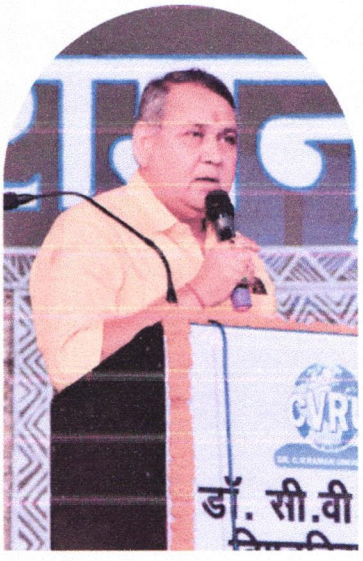

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लोरमी विधायक धर्मजीत सिंह ने कहा कि लोक कला, लोक गायन, लोक संस्कृति संपदा ही हमारी छत्तीसगढ़ की पूंजी है, इस पूंजी को सहेजने की जरुरत है इसे राजाश्रय मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि बहुत ही हर्ष की बात है कि डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय लोक कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए कार्य कर रहा है।

विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित मस्तूरी विधायक कृष्णमूर्ति बांधी जी ने कहा कि प्रदेश के कलाकार हमारे गौरव हैं और विश्वविद्यालय की बड़ी कल्पना है जो इस क्षेत्र में कार्य कर रहा है। मैं विश्वविद्यालय परिवार को साधुवाद देता हूं।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे जी ने कहा कि हमारे संस्थान का अपना दर्शन और प्रतिबद्धता है, इसलिए हम लोग कला और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति केंद्र की स्थापना की जाएगी।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रवि प्रकाश दुबे जी ने कहा जिस प्रकार छत्तीसगढ़ को वन संपदा और खनिज संपदा के लिए जाना जाता है, इसी तरह कला और संस्कृति हमारी समृद्धिशाली संपदा है, इसे संरक्षित एवं संवर्धित करने के लिए विश्वविद्यालय में ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग एवं छत्तीसगढ़ी शोधपीठ की स्थापना की गई है।

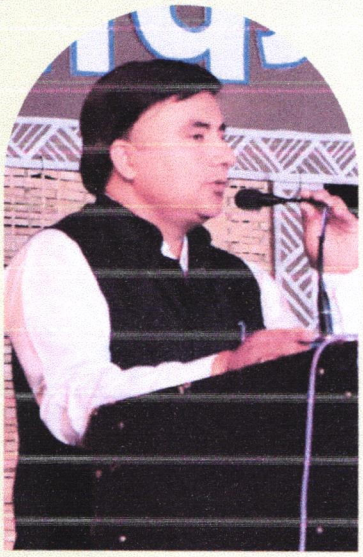

विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री गौरव शुक्ला जी ने कहा कि लोक कला का उतना ही महत्व है जितना कि आज शिक्षा का महत्व है इसलिए हर विद्यार्थी को अपने लोक कला एवं संस्कृति की जानकारी होना चाहिए एवं उससे जुड़े रहने चाहिए।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

सांस्कृतिक कार्यक्रम तृतीय दिवस

बांसुरी वादन

बांसुरी अत्यंत लोकप्रिय सुषिर वाद्य यंत्र होता है, बांसुरी की अभिव्यक्ति शक्ति अत्यंत विविधतापूर्ण है बांसुरी से लंबे, ऊँचे, चंचल, तेज व भारी प्रकारों के सूक्ष्म, भाविक मधुर संगीत बजाया जाता है। यह विभिन्न प्राकृतिक आवाजों की नकल करने में भी निपुण है पक्षियों की आवाज हूबहू निकाली जा सकती है। रामन् लोक कला महोत्सव में डॉ. निशांत शुक्ला की बांसुरी वादन की प्रस्तुति ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

गेंड़ी नृत्य

छत्तीसगढ़ के बस्तर अंचल में गेड़ी नृत्य को यहां के निवास करने वाले आदिवासी गोण्ड, माड़िया, मुरिया सभी प्रयोग करते हैं । साथ बारिश के दिनों में गांव में अधिकांश कीचड़ होता है उससे बचने के लिए भी ग्रामीण इसका उपयोग करते हैं ऐसे समय में एक दूसरे के घर जाने में सुविधा तो होती ही है वहीं कीड़े,मकोड़े,सांप,बिच्छू से भी बचने के लिए गेड़ी का उपयोग आदिवासी आज भी करते आ रहे हैं।

रामन् लोक कला महोत्सव में चैतन्य कॉलेज पामगढ़ की गेंड़ी नृत्य की शानदार प्रस्तुति ने लोगों का काफी मन मोह लिया। वहीं कलाकारों ने मंच में सम्मान पाकर काफी प्रफुल्लित हुए। इस कार्यक्रम में प्रमुख बात यह थी गेंड़ी नृत्य की प्रस्तुति चैतन्य कॉलेज की छात्राओं ने किया।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

लोक नृत्य

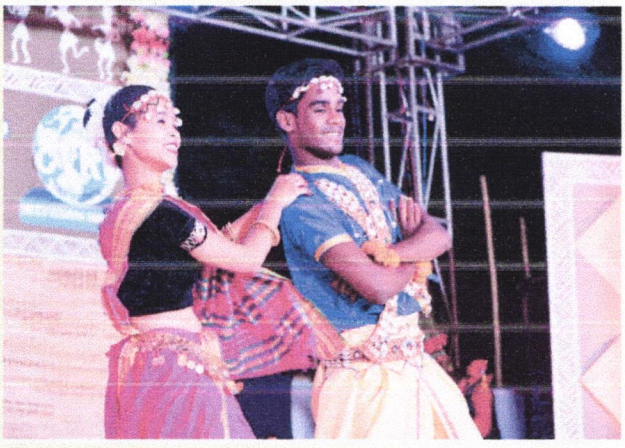

हिलेंद्र सिंह ठाकुर व साथी ने पारंपरिक लोकगीत एवं लोक नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी। जिसमें छत्तीसगढ़ के पारंपरिक लोकगीत एवं लोक नृत्य को एक-एक करके प्रस्तुति दी गई। प्रमुख रुप से गेंड़ी, सुआ नृत्य ने ग्रामीण, छात्रों एवं पालकों में आनंद उमड़ आई और वे भोर सराबोर हो गए।

पंथी नृत्य

इस नृत्य में गुरु घासीदास जी के जीवन चरित्र का वर्णन किया जाता है और बीच-बीच में गुरु घासीदास बाबा का जयकारा भी लगाया जाता है। पंथी नृत्य की वेशभूशा सादी होती है। अधिक वस्त्र या श्रृंगार पंथी नर्तकों की सुविधा की दृष्टि से अनुकूल भी नहीं है। वर्तमान समय के साथ इस नृत्य की वेशभूषा में कुछ परिवर्तन आया है। अब रंगीन कमीज और जैकेट भी पहन लिये जाते हैं। पंथी नृत्य के गीतों पर निर्गुण भक्ति एवं दर्शन का गहरा प्रभाव है। कबीर, रैदास तथा दादू आदि संतों का वैराग्य-युक्त आध्यात्मिक संदेश भी इसमें पाया जाता है। इसमें जितनी सादगी है, उतना ही आकर्षण और मनोरंजन भी है। यह नृत्य दो प्रकार का होता है- बैठ पार्टी और खड़ी पार्टी। बैठ पार्टी में वाद्य यंत्र बजाने वाले बैठ कर वाद्य बजाते हैं और नर्तक दल इनके चारों ओर घूमते हुए नृत्य करते हैं इस नृत्य में करतब नहीं दिखाया जाता है बैठ पार्टी में दो व्यक्ति गाने वाले होते हैं जिसमें एक गाता है और दूसरा दुहराता है इसके विपरीत खड़ी पार्टी में वादक खड़े होकर नाचते हुए वाद्य यंत्रों को बजाते हैं, इसमें एक व्यक्ति समूह के साथ नृत्य करते हुए गाता है और बाकी नर्तक उसे दुहराते हैं। रामन् लोक कला महोत्सव के तीसरे दिन राधेलाल रात्रे व साथियों ने पंथी नृत्य के माध्यम से किया। जिसका ग्रामीण अंचल से आये हुए लोगों एवं छात्रों ने जमकर आनंद उठाया और कॉफी सराहना भी किया।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रामन् लोककला महोत्सव 2019

स्टॉल का विवरण

विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रकार के स्टॉल भी लगाए जाते हैं, जो मूलतः ग्रामीण परिवेश, आत्मनिर्भरता एवं विभिन्न ग्रामीण हस्तकला, लोककला एवं जैविक उत्पादन से संबंधित था। स्टॉलों में छत्तीसगढ के पारम्परिक खानपान की व्यवस्था एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा ज्ञान आधारित विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनी भी लगाए गए थे। महोत्सव में विशेष रुप से छत्तीसगढ़ ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं परम्परागत अनाज संस्करण को भी प्रदर्शित किया गया था। इन स्थलों से विद्यार्थीयों ने न केवल अपने जड़ों को पहचाना बल्कि युवा पीढी ने आत्मनिर्भरता एवं उघमिता के भी गुण सीखे और प्रेरणा ली।

अलसी व केला से कपड़ा निर्माण - चांपा से आए हुए दीनदयाल यादव ने अलसी व केले के वृक्ष से कपड़ा बनाने की विधि एवं उसे निर्माण होने वाले कपड़े को प्रदर्शित किया और साथ ही साथ आत्मनिर्भरता एवं उद्यमिता के गुण की जानकारी भी दी।

अलसी से व्यंजन एवं कपड़ा निर्माण - चांपा से आए हुए रामाधार देवांगन ने बहुत ही पारंपरिक अलसी व्यंजन एवं कपड़ा तैयार करने की विधि को बताया और स्टाल के माध्यम से जीवंत प्रदर्शन भी किया। जिसमें ग्रामीण लोगों ने काफी रुचि दिखाई, स्टाल के माध्यम से स्थानीय कला कौशल को ज्यादा से ज्यादा जोड़ने की बात बताई गई।

कोसे व खादी से कपड़ा निर्माण - बिलासपुर के श्रीमती मंजू सिंह कोसे व खादी से वस्त्र निर्माण करने के प्रोसेस को बताया और कोसे व खादी से बने वस्त्रों को स्टॉल में भी दिखाया। उन्होंने ग्रामीण प्रौद्योगिकी के माध्यम से छात्रों को रोजगार परक होने के लिए प्रेरित भी किया।

माटी कला बोर्ड - इस स्टाल के माध्यम से राजपिंदरकौर ने घर में ही माटी से बने उत्पादों के बारे में जानकारी प्रदान की। जिसके माध्यम से छात्र घर में पढ़ाई के साथ-साथ स्थानीय कला कौशल से जुड़कर अपना व्यवसाय आरंभ कर सकते हैं। और आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

पैरा शिल्प कला - पैरा शिल्प कला से पैरा से बनने वाले विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई और साथ ही साथ बनाए गए उत्पादों को प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस स्टाल के माध्यम से उद्यमिता पर छात्रों को रोचक जानकारी भी प्रदान की गई।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रामन् लोककला महोत्सव 2019

स्टॉल का विवरण

रुरल टेक्नोलॉजी विभाग - विश्वविद्यालय के रुरल टेक्नोलॉजी विभाग द्वारा डॉ. अनुपम तिवारी ने विभिन्न प्रकार के हर्बल प्लांट के बारे में जानकारी प्रदान की एवं उससे बनने वाले उपयोगी समानों के बारे में विस्तार से जानकारी भी दी।

बायोटेक विभाग - विश्वविद्यालय के बायोटेक विभाग ने विभिन्न प्रकार के मॉडल बनाए जिसमें वातावरण को स्वच्छ एवं संरक्षित रखने की तकनीकी का प्रदर्शन भी किया, जिसमे ग्रामीण अंचल से आए हुए लोगों ने इसमें काफी रुचि दिखाई।

केमिस्ट्री विभाग - विश्वविद्यालय के रसायन विभाग द्वारा इनडोर प्लांट के बारे में स्टाल लगाया गया, जिसमें विभाग के डॉ. अमित शर्मा ने पूरी जानकारी प्रदान की उन्होंने इनडोर पौधे की उचित देखभाल कैसे करें इसके संबंध में रोचक जानकारी एवं संरक्षण करने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

बांस शिल्प कला - अनीता धूलिया ग्राम मोहतरा ने बांस से निर्मित सामग्रियों एवं उसके तैयार करने की विधि के बारे में जानकारी प्रदान की और ग्रामीण एवं छात्रों को अपने जड़ों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। इस स्टाल के माध्यम से उन्होंने सुपा, पर्रा, टुकनी आदि का स्टॉल भी लगाया।

छत्तीसगढ़ी व्यंजन स्टॉल - श्री आशुतोष ने गढ़ कलेवा नाम से छत्तीसगढ़ी व्यंजन की स्टाल लगाई, जिसमें उन्होंने विभिन्न प्रकार की छत्तीसगढ़ी व्यंजन को तैयार करने की विधिवत जानकारी साझा किया और छात्रों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया।

छत्तीसगढ़ी परिधान फोटोग्राफी - श्री परमानंद ने छत्तीसगढ़ी परिधान के संबंध में जानकारी प्रदान की एवं उन्हें उनकी फोटोग्राफी के माध्यम से विभिन्न अंचलों में भिन्न प्रकार की छत्तीसगढ़ी परिधान के संबंध में रोचक तथ्यों के बारे में भी बताया।

ज्वेलरी, खेल, खिलौने, मिठाई - इस स्टॉल के माध्यम से ग्रामीण अंचल में उपलब्ध होने वाले पारंपरिक ज्वेलरी, पारंपरिक खेल, पारंपरिक खिलौने, पारंपरिक मिठाई के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराई गई। जिससे छत्तीसगढ़ की लोक कला की परम्परा एवं संस्कृति की जानकारी प्रदान की गई।

बिलासपुर, गुरुवार 04 अप्रैल, 2019

लोक कला-गायन, संस्कृति और सभ्यता ही हमारे छत्तीसगढ़ की पूंजी हैः धर्मजीत

सीवीआरयू में चल रहे तीन दिवसीय रामन लोककला महोत्सव का हुआ समापन

डॉ. सीवी रामन यूनिवर्सिटी में लोक कला महोत्सव में उपस्थित अतिथि और दर्शक।

सिटी रिपोर्टर | बिलासपुर

महोत्सव में प्रस्तुति देते कलाकार।

लोक संस्कृति केंद्र की स्थापना होगी: चौबे

महोत्सव हर साल आयोजित होगा: गौरव

जिंदगी लाइव

बिलासपुर, गुरुवार 4 अप्रैल 2019

डॉ. सीवी रामन विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय रामन लोककला महोत्सव का समापन

लोक कला व संस्कृति ही हमारी पूंजी

छत्तीसगढ़ी भाषा और लोक संस्कृति केंद्र की स्थापना होगीः चौबे

बिलासपुर, बुधवार 3 अप्रैल, 2019 | 17

छत्तीसगढ़ी लोक गीत-संगीत पर झूमे लोग

सीवीआरयू सांस्कृतिक छटा से सराबोर, तखतपुर विधायक रश्मि ने की शिरकत

सिटी रिपोर्टर | बिलासपुर

सीवी रामन विश्वविद्यालय में लोक कला महोत्सव के दौरान उपस्थित अतिथि।

डॉ. सीवी रमन विश्वविद्यालय में चल रहे लोककला महोत्सव के दूसरे दिन मंगलवार को लोक कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी लोक गीत और लोक संगीत की शानदार प्रस्तुति दी। नाट्य दल अभिनय ने छत्तीसगढ़ की बात को लोगों के सामने रखा। छत्तीसगढ़ी व्यंजनों का सभी ने आनंद लिया और प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदेश की माटी को जाना समझा।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि तखतपुर विधायक रश्मि सिंह ने कहा कि अपनी संस्कृति से सभी को लगाव होता है। हर देश और राज्य की संस्कृति उसकी अपनी संस्कृति होती है। सीवीआरयू अंग्रेजी पद्धति साथ संस्कृति व लोककला की भी शिक्षा दे रहा है। विशिष्ट अतिथि राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय कुमार पाठक ने कहा कि विवि ने पूरे प्रदेश में अच्छा संदेश दिया है। विवि के सम कुलपति प्रो. डॉ. पीके नायक व विनय उपाध्याय ने भी अपने विचार रखे। भोपाल से आए कथाकार व संपादक समावर्तन मुकेश वर्मा, कवि एवं गद्यकार बलराम गुमास्ता, आईसेक्ट के निदेशक नितिन वत्स व वनमाली सृजनपीठ के अध्यक्ष सतीश जायसवाल सहित विभागाध्यक्ष व अंचल के लोग उपस्थित थे। रामन लोक महोत्सव में छत्तीसगढ़ के लोक कला संस्कृति से संबंधित स्टॉल लगाए गए हैं। इसमें प्रदेश सरकार की योजनाओं की भी झलक नजर आ रही है। छात्रों ने नवा गरवा बाड़ी पर केंद्रित प्रदर्शनी लगाई गई है।

प्रसन्नता की खोज के लिए मिट्टी से जुड़ना होगा: चौबे

विवि के कुलाधिपति और कार्यक्रम के अध्यक्ष संतोष चौबे ने बताया कि भारतीय सबसे अधिक खुश इसलिए रहते हैं क्योंकि हमें अपनी मिट्टी की खुशबू की समझ है। यह बातें अपनी लोककला और संस्कृति को समझने वाले ही समझ सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले हमें अपनी मिट्टी से जुड़ना होगा। प्रसन्नता की खोज के लिए मिट्टी से जुड़ना होगा।

जीवन आनंद व रस का स्त्रोत है महोत्सवः गौरव

विश्वविद्यालय के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि रामन लोक कला महोत्सव सभी छात्रों के जीवन में रस घोलेगा। यह महोत्सव जीवन आनंद के साथ छात्रों के जीवन में मूल्यों को भी जागृत करेगा। इस मंशा से ही महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। सीवीआरयू लोक कला, संस्कृति, लोक परंपरा को संरक्षित और संवर्धित करने के लिए संकल्पित है।

यह प्रस्तुतियां हुई : रायपुर से आए राकेश तिवारी व साथियों ने राजा फोकलवा नाटक का मंचन किया। नाटक में संदेश दिया कि अच्छे काम का फल अच्छा होता है और बुरे काम का फल बुरा। बिलासपुर के लक्ष्मी पटेल व साथियों ने लोक कला और संस्कृति की प्रस्तुति दी। बेलगहना से आए नरेंद्र यादव व साथियों ने करमा नृत्य की प्रस्तुति दी।

कलाकारों ने गेड़ी और पंथी नृत्य की झमाझम प्रस्तुति दी

नवभारत रिपोर्टर | बिलासपुर

आयोजन

- तीन दिवसीय रामन लोककला महोत्सव का हुआ समापन
- अगले साल नई उमंग के साथ मिलने वचन देकर लोक कलाकार हुए विदा

छत्तीसगढ़ी भाषा और लोक संस्कृति केंद्र की स्थापना होगी-चौबे

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

जिंदगी लाइव

बिलासपुर, मंगलवार 2 अप्रैल 2019

डॉ. सीवी रामन विश्वविद्यालय में 3 दिवसीय रामन लोक कला महोत्सव का आगाज़

प्रदेश की संस्कृति संरक्षित रखेगा सीवीआरयू

डॉ. सी वी रामन विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय रामन लोककला महोत्सव का शुभारंभ हुआ। पहले दिन पद्म विभूषण पंडवानी गायिका तीजन बाई ने फिर परिचित अंदाज में पंडवानी की शानदार प्रस्तुति दी। मुंबई के कबीर कैफे ने जमकर धूम मचाई। नीरज आर्य

एवं साथी ने कबीर के दोहे वेस्टर्न धुन में गाए। लोरमी के रावेली ग्रुप ने विलुप्त होती कला बांस गीत की प्रस्तुति दी। सीवीआरयू स्टूडेंट्स ने छत्तीसगढ़ी नृत्य की प्रस्तुति दी। शाम को विश्वविद्यालय के महोत्सव में संपूर्ण छत्तीसगढ़ की संस्कृति नजर आई।

बिलासपुर। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बिलासपुर विधायक शैलेश पांडे ने कहा कि नई टैक्नोलॉजी युवाओं को लोककला और संस्कृति से दूर ले जा रही है। आज अपनी मिट्टी से जुड़ने की जरूरत है। विवि ने यह महत्वपूर्ण कार्य किया है और यह महोत्सव राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रूप लेगा। श्री पाण्डेय ने कहा कि सीवीआरयू छत्तीसगढ़ की लोक कला को अनंत काल तक संरक्षित करेगा। उन्होंने विवि में बीते दिनों की यादों को साझा करते हुए कहा कि जब काम करो तो ऐसा इतनी ईमानदारी से करो की वह काम ही अपना हो जाए। इस विवि में मैंने कभी भी नौकर की तरह नहीं; मेरा विवि है यह सोच कर काम किया। पहली बार विश्वविद्यालय आए शैलेष पाण्डेय ने कहा कि मेरा इस विवि में प्रेम कम नहीं हुआ है, मुझे यहां के सभी लोगों को बहुत प्रेम किया है। मैं यहां के सभी साथियों का ऋणी हूं और रहूंगा। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित भोपाल से आए कथाकार एवं संपादक समावर्तन मुकेश वर्मा, कवि एवं गद्यकार बलराम गुमास्ता, आईसेक्ट के निदेशक नितिन वत्स और वनमाली सृजनपीठ के अध्यक्ष संतोष जायसवाल ने भी सभी को संबोधित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, विद्यार्थी सहित हजारों की संख्या में अंचल के लोग उपस्थित थे।

पद्म विभूषण पंडवानी गायिका तीजन बाई और मुंबई के कबीर कैफे ने जमाया रंग

विरासत का सम्मान होना चाहिए: चौबे

[illegible]

जीवित रखी जाएं लोक कलाएं: प्रो.दुबे

[illegible]

पाश्चात्य संस्कृति में न उलझें: गौरव

[illegible]

सीवीआरयू में समाया समूचा छत्तीसगढ़

[illegible]

पद्म विभूषण पंडवानी गायिका तीजन बाई और मुंबई के कबीर कैफे ने जमाया रंग

नवभारत रिपोर्टर | बिलासपुर

डॉ सी वी रामन विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय रामन लोककला महोत्सव का शुभारंभ हुआ. इस महोत्सव में पहले दिन आज पद्म विभूषण पंडवानी गायिका तीजन बाई ने अपने

कार्यक्रम

- लोक कला को अनंत काल तक संरक्षित करेगा सीवीआरयू-शैलेष
- सीवीआरयू में 3 दिवसीय लोक कला महोत्सव का आगाज

पारंपरिक और चिर परिचित अंदाज पंडवानी की शानदार प्रस्तुति दी. इसके बाद मुंबई के कबीर कैफे ने जमकर धूम मचाया. नीरज आर्य एवं साथी ने कबीर के दोहे की वेस्टर्न धुन में गाया और उस रूप में अंचल के लोगों के सामने रखा, जिसे सभी ने पसंद किया. इसके बाद लोरमी के रावेली ग्रुप ने बांस गीत की प्रस्तुति दी विलुप्त होते इस कला को लोगों ने बहुत सराहा. डॉ सी वी रामन विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने छत्तीसगढ़ी नृत्य की

प्रस्तुति दी. शाम को विश्वविद्यालय के महोत्सव में संपूर्ण छत्तीसगढ़ की संस्कृति नजर आई.

इस अवसर पर उपस्थित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बिलासपुर विधायक शैलेश पांडे ने कहा कि नई टैक्नोलॉजी युवाओं को लोक कला और संस्कृति से दूर ले जाती जा रही है, आज अपनी मिट्टी से जुड़ने की जरूरत है, विवि ने यह महत्वपूर्ण कार्य किया है और यह महोत्सव राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रूप लेगा. श्री पाण्डेय ने कहा कि सीवीआरयू छग की लोक कला को अनंत काल का संरक्षित करेगा.

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित भोपाल से आए कथाकार एवं संपादक समावर्तन मुकेश वर्मा, कवि एवं गद्यकार बलराम गुमास्ता, आईसेक्ट के निदेशक नितिन वत्स और वनमाली सृजनपीठ के अध्यक्ष संतोष जायसवाल ने भी सभा को संबोधित किया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, विद्यार्थी सहित हजारों की संख्या में अंचल के लोग उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि विज्ञान और तकनीक की शिक्षा के साथ-साथ लोक कला को समझना जरूरी है, यह हमें हमारी संस्कृति से जोड़ती है. श्री चौबे ने तीजन बाई को स्व शारदा चौबे लोक सम्मान से विभूषित किया.

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि कला संस्कृति और साहित्य मानव जीवन का अनिवार्य अंग है इसके बिना मानव जीवन ही अधूरा है.

आज होंगे यह आयोजन

त्रिवेणी लोक कला परिषद छत्तीसगढ़ी नाटक (राजा फोकलवा) रायपुर, लक्ष्मी पाटील व साथी कला मंच (पारंपरिक लोकगीत एवं लोक नृत्य), नरेंद्र यादव व साथी करमा नृत्य, बेलगहना, विश्वविद्यालय की प्रस्तुति, छत्तीसगढ़ी नृत्य.

विश्वविद्यालय के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि चूंकि यह विश्वविद्यालय आदिवासी क्षेत्र में स्थापित किया गया है इसलिए लोक कला धरोहर को न केवल संरक्षित करने बल्कि उसे आगे बढ़ाने का दायित्व विश्वविद्यालय का है. लोक कला, संस्कृति महोत्सव कराने वाला यह प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय बन गया है. श्री शुक्ला ने कहा कि आधुनिकता और पाश्चात्य के फेर में विद्यार्थी न उलझें बल्कि लोक कला और लोक माध्यम से भी सर्वोच्च शिखर तक पहुंचा जा सकता है इसका जीवंत उदाहरण पद्म विभूषण तीजन बाई हमारे बीच उपस्थित है इसी तरह कबीर के ज्ञान को युवाओं तक रोचक माध्यम से पहुंचाने वाले कबीर कैफे भी एक बहुत बड़ा [illegible]

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

www.naidunia.com

तीन दिवसीय रामन लोककला महोत्सव का समापन, फिर आने का वादा कर लौटे कलाकार

लोककला व संस्कृति ही हमारी पूंजी

बिलासपुर। नईदुनिया न्यूज.

डॉक्टर सीवी रामन विश्वविद्यालय में चल रहे लोककला महोत्सव के तीसरे और अंतिम दिन लोक कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति से मन मोह लिया। यहाँ डॉ. निशांत शुक्ला के बांसुरी वादन के साथ कलाकारों ने गेड़ी नृत्य, पंथी नृत्य, छत्तीसगढ़ी लोक गीत और नृत्य की झमाझम प्रस्तुति दी। इसके साथ ही सभी कलाकारों ने अगले साल नई उमंग के साथ मिलने का वादा कर विदाई ली।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लोरमी विधायक धर्मजीत सिंह ने कहा कि लोक कला, गायन, संस्कृति, सभ्यता ही हमारे छत्तीसगढ़ की पूंजी है। इस पूंजी को ही सहेजने की जरूरत है। इसे राजाश्रय मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि बहुत हर्ष की बात है कि यह विश्वविद्यालय लोक कला के संरक्षण और संवर्धन का कार्य कर रहा है। विशिष्ट अतिथि मस्तूरी विधायक कृष्णमूर्ति बांधी ने कहा कि प्रदेश के कलाकार हमारे गौरव हैं। विश्वविद्यालय की यह बड़ी कल्पना है। जो इस क्षेत्र में काम कर रहा है। कुलपति प्रो. आरपी दुबे ने कहा कि जिस प्रकार छत्तीसगढ़ को वन और खनिज संपदा के लिए जाना जाता है। लोककला और लोक संस्कृति भी हमारी समृद्ध वाली संपदा है। इसे संरक्षित करने विवि में ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग, छत्तीसगढ़ी शोधपीठ और संग्रहालय की स्थापना की गई है। इस अवसर पर पत्रकार रुद्र अवस्थी, भोपाल से आए कथाकार एवं समावर्तन के संपादक मुकेश वर्मा, कवि बलराम गुमास्ता, आइसेक्ट के निदेशक नितिन वत्स और वनमाली सृजनपीठ के अध्यक्ष सतीश जायसवाल आदि उपस्थित थे।

बिलासपुर। लोक कला महोत्सव के समापन अवसर पर उपस्थित अतिथि व विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं। फोटो: नईदुनिया

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते कलाकार

भाषा और लोक संस्कृति केंद्र की स्थापना होगी : चौबे

विवि के कुलाधिपति और कार्यक्रम के अध्यक्ष संतोष चौबे ने कहा कि हमारे संस्थान की अपना दर्शन है और प्रतिबद्धता है। इसलिए हम लोक कला और संस्कृति के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विवि में छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति केंद्र की स्थापना की जाएगी।

हर साल होगा महोत्सव : गौरव

इस अवसर विवि के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि लोक कला का उतना ही महत्व है, जितना की आज शिक्षा का महत्व है। इसलिए हर विद्यार्थी को अपनी लोक कला और संस्कृति की जानकारी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हर साल रामन लोक कला महोत्सव आयोजित किया जाएगा। हम अगले साल नए उत्साह, उमंग के साथ हम सबके सामने होंगे।

haribhoomi.com

लोक नृत्य व गायन, नाट्य की शानदार प्रस्तुति

सीवीआरयू में कलाकारों ने बिखेरे छत्तीसगढ़ी लोक कला के रंग

तखतपुर विधायक रश्मि सिंह का सम्मान करते सीवी रामन विवि के कुलाधिपति संतोष चौबे, कुलसचिव गौरव शुक्ला।

प्रस्तुति देते कलाकार।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बिलासपुर

डॉक्टर सी वी रमन विश्वविद्यालय में चल रहे लोककला महोत्सव के दूसरे दिन आज लोक कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी लोक गीत और लोक संगीत की शानदार प्रस्तुति दी। नाट्य दल अभिनय ने छत्तीसगढ़ की बात लोगों तक पहुंचाई। छत्तीसगढ़ी व्यंजनों का सभी ने आनंद लिया और प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदेश की माटी को जाना समझा।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि तखतपुर विधायक रश्मि सिंह ने कहा कि हर देश और राज्य की संस्कृति उसकी अपनी संस्कृति होती है। डॉ.सी.वी.रामन विश्वविद्यालय अंग्रेजी पद्धति के साथ संस्कृति और लोककला की भी शिक्षा दे रहा है। यह पूरे प्रदेश के लिए गौरव की बात है। श्रीमती सिंह ने छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के अनेक कलाकारों का जिक्र करते हुए उनकी बातें साझा की। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ.विनय कुमार पाठक ने कहा कि इस आयोजन के विवि ने पूरे प्रदेश में अच्छा संदेश दिया है। महोत्सव से कलाकारों को मंच मिलेगा। विवि छत्तीसगढ़ी संस्कृति, कला और साहित्य को संजोने का ऐतिहासिक कार्य कर रहा है। कार्यक्रम में विवि के सम कुलपति प्रो.डॉ.पी.के.नायक और विनय उपाध्याय ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर भोपाल से आए कथाकार मुकेश वर्मा, कवि एवं पत्रकार बलराम गुमास्ता, आईसेक्ट के निदेशक नितिन वत्स और वनमाली सृजनपीठ के अध्यक्ष सतीश जायसवाल व विवि के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष उपस्थित थे।

झमाझम प्रस्तुति से अंचल के लोग हुए सराबोर

कार्यक्रम में रायपुर से आए राकेश तिवारी और साथियों ने राजा फोकलवा नाटक का मंचन किया। इसे लोक कलाओं से सजाया गया था। इस नाटक में संदेश दिया गया कि अच्छे काम का फल अच्छा होता है और बुरे काम का बुरा फल। इसी तरह बिलासपुर के लक्ष्मी पटेल और साथियों ने लोक कला और संस्कृति की रंगारंग प्रस्तुति दी। जबकि लाल बेलकहना से आए नरेंद्र यादव एवं साथियों ने करमा नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी। इस महोत्सव में पहले दिन पद्म विभूषण पंडवानी गायिका तीजन बाई ने अपने पारंपरिक और चिर परिचित अंदाज पंडवानी की शानदार प्रस्तुति दी। इसके बाद मुंबई के कबीर कैफे ने जमकर धूम मचाया। नीरज आर्य एवं साथी ने कबीर के दोहे को वेस्टर्न धुन में गाया और नए रूप में अंचल के लोगों के सामने रखा, जिसे सभी ने पसंद किया।

प्रसन्नता के लिए मिट्टी से जुड़ना होगा:चौबे

विवि के कुलाधिपति और कार्यक्रम के अध्यक्ष संतोष चौबे ने एक संदर्भ से बताया कि माटी की खुशबू की समझ होने से भारतीय सबसे अधिक खुश रहते हैं। हमें अपनी प्रकृति के साथ जीवन जीना आता है और हमें मानवीय मूल्यों की जानकारी है। यह बातें अपनी लोककला और संस्कृति को समझने वाले ही समझ सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले हमें अपनी मिट्टी से जुड़ना होगा।

जीवन आनंद व रस का स्त्रोत है महोत्सव:गौरव

इस अवसर पर विवि के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि रामन लोक कला महोत्सव सभी विद्यार्थियों के जीवन में रस घोलेगा। यह महोत्सव जीवन आनंद के साथ विद्यार्थियों के जीवन के मूल्यों को भी जागृत करेगा। इस मंशा से ही महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। सीवीआरयू लोक कला, संस्कृति लोक परंपरा को संरक्षित व संवर्धित करने के लिए संकल्पित है।

नरवा, गरूवा, घुरवा अउ बाड़ी भी..

रामन लोक महोत्सव में छत्तीसगढ़ के लोक कला संस्कृति से संबंधित स्टॉल लगाए गए हैं, जिसमें की प्रदेश सरकार की योजनाओं की भी झलक नजर आ रही है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा नरवा गरवा बाड़ी पर केंद्रित प्रदर्शनी लगाई गई है। जिसमें सरकार की मंशा को दर्शाया गया है कि सरकार नरवा गरवा घुरवा और बाड़ी में इस आशय से क्या काम करना चाहती है और उसके फायदे क्या होंगे। विवि के ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से हर्बल गार्डन और बाड़ी की फसल का स्टॉल भी लगाया गया है। जिसमें विद्यार्थी किसानों को हर्बल और फसल उत्पादन की जानकारी दे रहे हैं। इसी तरह माटी कला, ढोकरा आर्ट, छत्तीसगढ़ी व्यंजन, पर्रा, सूपा, छत्तीसगढ़ी परिधान सहित अनेक प्रदर्शनी ने सभी को मोहा।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

KARGI ROAD, KOTA, BILASPUR (C.G.) Ph. : +91-7753-253801

Email: admission@cvru.ac.in, info@cvru.ac.in

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)